E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

March 2023 Special Issue 08 Volume I

अ. शि. मंडल द्वारा संचालित, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय ट्रस्ट का

चं. ह. चौधरी कला, शं. गो. पटेल वाणिज्य एवं बा. भ. जा. पटेल विज्ञान महाविद्यालय, तलोदा,

जि. नंदुरबार महाराष्ट्र

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं

उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

वार्षिक अधिवेशन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी

12 मार्च 2023

आज़ादी के 75 वर्ष के हिंदी साहित्य की कालजयी रचनाएँ

संपादक

डॉ. महेश गांगुर्डे

महासचिव

उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

अतिथि संपादक

प्रोफेसर संजयकुमार शर्मा

अध्यक्ष

उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

Chief Editor :
Dr. Girish S. Koli

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
March 2023 Special Issue 08 Volume I
SJIF Impact- 5.67

33	मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' में चित्रित स्त्री चेतना -- डॉ.मनोज सामा पाडवी	98
34	लक्ष्मीनारायण मिश्र जी का नाटक 'मृत्युंजय' में गांधी दर्शन-- डॉ. विजयप्रकाश ओमप्रकाश शर्मा	100
35	कालजयी रचना-'चांदनी का दुःख' -- डॉ.प्रीति सुरेंद्रकुमार सोनी	102
36	'तरकश के तीर' ग़ज़ल-संग्रह में सामाजिक और राजनीतिक चिंतन- प्रा. छाया देवीदास पाटील	106
37	वीरेन्द्र जैन के उपन्यासों में पर्यावरण जागृति एवं मानवतावादी चिंतन -- डॉ. काळु दत्तु बागुल	109
38	आदिवासी जीवन की मूल संवेदना को दर्शाता आंचलिक उपन्यास 'मरे न माहुर खाय'-डॉ. स्वाती वसंत शेलार	112
39	सुधा अरोडा की कहानी 'छोटी हत्या, बडी हत्या' के संदर्भ में- डॉ. योगेश जी. पाटील / प्रा. भारती माधवराव सोनवणे	115
40	'टीन के घेरे' कहानी संग्रह में नारीविषयक चिंतन-- प्रा. एम. जी. ठाकरे	117
41	भारतीय संस्कृति को नव-संजीवनी प्रदान करता ग़ज़ल-संग्रह - 'आदमी है कहाँ' - डॉ. दिपक (कला) विश्वासराव पाटील	119
42	मन्नू भंडारी की कहानियों में पारिवारिक एवं दाम्पत्य विघटन का चित्रण-- प्रा. राजेश एम. खर्डे	122
43	विभाजन की त्रासदी – 'मलबे का मालिक'--प्रा. राजेन्द्र मुरलीधर ब्राहमणे	125
44	कालजयी उपन्यास 'चौदह फेरे'– प्रा. डॉ. अंजीर नथ्थू भील	128
45	कमलेश्वर का कालजयी उपन्यास – 'कितने पाकिस्तान' प्रो. डॉ. संजयकुमार शर्मा / प्रा. डॉ. दत्तात्रय दशरथ पटेल	130
46	शकुंतिका – एक कालजयी उपन्यास - डॉ. संजयकुमार शर्मा / परेश रामकृष्ण सननसे	134
47	हिंदी साहित्य की कालजयी रचना अमरकांत जी का उपन्यास 'उन्हीं हथियारों से' प्रो. डॉ. राजेंद्र काशीनाथ जाधव / श्री. प्रमोदगिर बारकुगिर गोसावी	138
48	मनीषा कुलश्रेष्ठ के 'पंचकन्या' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श - प्रा. सपना पाटील /प्रो. डॉ. जिजाबराव व्ही. पाटील	141
49	'अस्तित्व' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श --प्रा. वैशाली प्रमोद अहिरे/ प्रो. डॉ. जिजाबराव व्ही. पाटील	143
50	नाटककार स्वदेश दीपक की कालजयी नाट्य कृति: ' जलता हुआ रथ ' -डॉ. बन्सीलाल हेमलाल गाडीलोहार	145
51	प्रभा खेतान का काव्यसंग्रह 'कृष्णाधर्मा मैं'-प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	149
52	'शिकंजे का दर्द'कालजयी रचना--_श्रीमती संघमित्रा म. गवळे/ प्रो. डॉ. संजयकुमार नं. शर्मा	151
53	संजीव की कालजयी कहानी – 'अपराध'-- डॉ.सुनिल पानपाटील / श्री.मनोज रामदास पाटील	153
54	सुषमा मुनीन्द्र जी की कालजयी कहानियां -मेमो, क्षुधा। - प्रो.डॉ.संजयकुमार नं. शर्मा, / भारती राजधर निकम	156
55	'अभिषेक' उपन्यास में चित्रित सामाजिक बोध– डॉ . जगदीश चव्हाण	159
56	'दौड़' उपन्यास में व्यक्त मानवीय संघर्ष-- डॉ कृष्णा प्रल्हाद पाटील	161
57	'मैला आँचल' में अभिव्यंजित समाज वर्तमान परिप्रेक्ष्य में -- प्रा. महेंद्र गोरजी वसावे	163
58	आज़ादी के 75 वर्षे के हिंदी साहित्य की कालजयी रचनाएं- प्रा. डॉ. करुणा दत्तात्रय आहिरे	166
59	हिंदी साहित्य की कालजयी गद्य रचनाओं में गैर दलित साहित्यकार–प्रा. तडवी नटवर संपत	168
60	धरती की सतह पर और समय से मूठभेड़–कालजयी ग़ज़ल संग्रह -डॉ.वसीम मक्रानी	171
61	'कर्ण की आत्मकथा' में पौराणिक बोध--प्रा.भाऊसाहेब नामदेव पाटील	174
62	'सलाम आख़िरी' उपन्यास में वर्णित बेबस जिंदगी का चित्रण– डॉ. मनोज पाटील	176
63	'जंगल पहाड़ के पाठ' : आदिवासी संकृति का दस्तावेज-- प्रा. शोभा अहिरराव / प्रा.डॉ.गौतम कुवर	180
64	दो कालजयी कहानियाँ-'अपना-अपना भाग्य' और 'उसने कहा था' -नागेश भरत सूर्यवंशी / डॉ.संजयकुमार शर्मा	183
65	गोदान : एक कालजयी उपन्यास- डॉ. सुभाष कुमार ठाकरे	186
66	परशुराम शुक्ल के बाल काव्य मे सांस्कृतिक चेतना-- शेख जेबा शकिल	189
67	रश्मिरथी में कर्ण-कृष्ण संवादों की कालजयिता - डॉ. सविता काशिराम तायडे	191

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
March 2023 Special Issue 08 Volume I SJIF Impact- 5.67

51

प्रभा खेतान का काव्यसंग्रह `कृष्णाधर्मा मैं`

प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल जि.जलगाँव

प्रस्तावना:-

उत्तरशती के हिंदी साहित्य में नारी लेखन की अहम भूमिका रही हैं। फलस्वरूप जो नारी- जीवन हाशिए पर था वह परिधि में आ गया है। महिलाओं द्वारा नारी जीवन के अनेकानेक प्रश्नों, समस्याओं का अध्ययन, चिंतन, मनन एवं लेखन किया गया है। समकालीन महिला साहित्यकारों में कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग आदि के साथ जुड़नेवाला एक महत्वपूर्ण नाम है प्रभा खेतान। वह एक संवेदनशील कवयित्री, उपन्यासकार, कहानीकार, चितंक, अनुवादक, संपादक तथा आत्मकथाकार है। नारी-जीवन अनेक साहित्य का केंद्रीय विषय रहा है। उनके साहित्य में नारी-जीवन के विविध आयाम परिलक्षित होते हैं।

कृष्णा धर्मा मैं:-

प्रभा खेतान का यह चौथा काव्य संग्रह है सन 1986 में `स्वर समवेत` कोलकाता से प्रकाशित हुआ है। `कृष्णा धर्मा मैं` एक लंबी लंबी कविता है। प्रभा ने `स्व` को कृष्ण से जोड़ दिया है। वह जो कुछ कर रही है कृष्णाधर्मा बनकर कर ही रही है। प्रभा खेतान स्वयं कहती है कि "यह कविता खुद-ब-खुद टुकड़े-टुकड़े में कलम के सहारे कागज पर उतरती चली गई। किसी महत्ती प्रेरणा के रूप में नहीं, यह कोई अमूर्त धारणा भी नहीं थी। यह तो अपने समूचे अस्तित्व के साथ सफेद कागज पर उभरती हुई एक बिल्कुल ठोस कविता थी।"[1]

प्रभा खेतान ने भी कृष्ण की तरह अपनी भूमिका निभाई है। जिस तरह महाभारत में कृष्ण ने अपनी मुख्य भूमिका निभाई, धर्म की रक्षा करने के लिए। प्रभा ने काव्यकृति के आरंभ में अपनी भूमिका में कहा है कि "पूरी रचना के दौरान में आज की चुनौतियों के बीच अपने को कृष्ण की साझीदार पाती रही हूँ। हास-उल्लास के क्षणों से लेकर महाभारत के महासंहार तक के प्रकरणों के बीच, केलिकुंजों से लेकर प्रभास-तीर्थ तक की रचना यात्रा के बीच। शायद साझेदारी के इस एहसास में ही मुझे स्थूल कथा-सूत्रों से बचाकर चेतना के स्तर पर कृष्ण से जोड़ा है, कृष्णाधर्मा बनाया है।"[2]

प्रभा ने मनुष्य जीवन को भी महाभारत की तरह माना है। इसलिए इस जीवन में विशेष उपलब्धियाँ पाने के लिए कृष्ण की नीतियों को अपनाने के लिए कहती हैं। इतिहास निर्माण में कृष्ण की तरह वे अपनी साझेदारी बराबर मानती है-

"तुम कौन कृष्ण
और मैं कौन
तुम्हारी विराट चेतना
और मेरी व्यक्ति चेतना
इतिहास तो हमारे साझे का क्षेत्र है।"[3]

प्रभा खेतान कृष्ण से आग्रह करती है। कि तुम युगों-युगों तक अवतार लेते रहो। ताकि आम आदमी के दर्द को दर्द को उभार सको। कृष्ण भी अपने जन्म से लेकर महाभारत तक की अपनी लीलाओं के कारण ही महान बन पाए। किंतु फिर भी मनुष्य जन्म लेने की पीड़ा उन्हें भोगनी पड़ी। इसीलिए प्रभा खेतान का मानना है कि परमात्मा कभी जन्म नहीं लेता, मानव ही अपने कर्म से परमात्मा बनता है। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "जानती हूँ / अकेले तुम कहीं नहीं पहुँचोगे / कृष्ण / लेते रहो / युगों-युगों तक अवतार / अकेले तुम बना नहीं सकते / आदमी को देवता / बार-बार बनकर / एक अदना आदमी / तुम्हें भी भोगना पड़ता / आदमी होने का दर्द।"[4]

प्रभा खेतान के काव्य में आम आदमी का जीवन अश्रुमय होता हैं। सभी प्रकार के अभाव से संघर्ष करता हुआ वह हताश-निराश भी हो जाता हैं। आर्थिक स्थिति ने उसे विवश कर दिया हैं। फिर से कोई अवतार हो समय को चक्र चले और चारों ओर से यह स्थिति बदल जाए। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- " लोटी रही / असमर्पिता / बार-बार पाती रही / अपनी ही तरह एक नश्वर आदमी को अपने पास।"[5]

इस युग का आम आदमी उस समय के चित्र को देखकर काँप गया है। क्योंकि मानव अवतार में परमात्मा भी आम आदमी ही था। नश्वरता की राह पर चल रहा था। आज का यह आदमी वह भू-स्थल पर जितनी भी जीव दशा इसी आतंक का शिकार हुई हैं।

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
March 2023 Special Issue 08 Volume I
SJIF Impact- 5.67

प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "जब जारी था भयंकर युद्ध तुम भी कांप गये, देव / दानवों के आतंक से / कौन था / एक अदना आदमी के सिवा।"[6]

आज के समय में आम आदमी समाज व्यवस्था के साथ जुड़ा हैं। क्योंकि वह भी उसी का एक अंश मात्र है। जब-जब समाज पर आतंक हो रहे थे। तब-तब उन आंतक के प्रहारों को आम आदमी ही रोक पाया था। आज जो समाज के सामने यह परिस्थिति है। वह उसने अपने आप को समर्पित करके ही दी है- "तुम्हें समर्पित करने के लिए / बचा पाने को अमृत-कलश? / कौन था / एक अदना आदमी के सिवा / जो झेल सकता मंथन का दाह।"[7]

युगों-युगों से चले आ रहे जीवन चक्र में आम आदमी ही संघर्ष करके जीवन व्यतीत करने लगा हैं। समाज की व्यवस्था के अनुसार ही उसे मिली आम आदमी होने की स्थिति। उसने अभी जिसे अपने-आप ही चुन लिया हैं- "सब कुछ संबोधित / रे एकल को / हाँ / स्वेच्छा से ओढ़ी है / आदमी होने की सर्वोच्च भूमिका।"[8]

प्राचीन काल से आ रही समाज व्यवस्था में आम आदमी ही प्रारंभ से अंत तक है। इन सभी फासलों में महत्वपूर्ण आम आदमी ही हैं। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "अपनी पहुंच पर बैठकर / गिरेगा संत / आँकेगा फासले की दूरी / सोचेगा / कृष्णा होने तक के सारे संदर्भों पर / और समझेगा तब / जब तक थे फासले / तभी तक था वह आदमी।"[9]

समसामयिक युग में आम आदमी असहनीय परिस्थितियों के चक्र में फँसा हुआ हैं। वही संघर्ष भी करता हैं। उसे जीवन में जिंदा रहने के लिए केवल यही विकल्प हैं कि, अपने सामने खड़े संकटों, अभाओं से संघर्ष करता रहें। उसके भूतल से चले जाने के बाद भी उसके सामने यही वेदना हमेशा-हमेशा के लिए चिपकी रही हैं। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "तृप्त होती हूँ मैं / तृप्त होती है वेदना / आज फिर / आदमी का पुनर्जन्म होता है / इतिहास में।"[10]

प्रभा खेतान का मानना है कि जीवन महासंग्राम है। संघर्षरत रहने से साहस, आत्मबल बढ़ता हैं। मनुष्य स्वाभिमानी है। उसमें परिस्थितियों के साथ सामना करने की शक्ति है। इसीलिए वे कृष्ण की भाँति जीवन के पथ पर बिना रुके आगे चलते रहने की प्रेरणा देती है। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "तुम जानते हो कृष्ण / न कभी रुका है / इतिहास का संघर्ष / न खत्म होगी कभी / नारायण की भूमिका।"[11]

प्रभा खेतान कहती है कि सच्चाई यह है कि महाभारत कभी समाप्त नहीं होता। महाभारत में पांडवों की विजय हुई फिर भी उन्हें महाप्रस्थान ही करना पड़ा है। सम्प्रति, मानवता के विरुद्ध दानवता खड़ी हो रही है। प्रभा खेतान इस के संदर्भ में लिखती है- "जागता है / यंत्रणाओं का एक पूरा नर्क / कहीं दु:शासन कहीं दुर्योधन / कहीं अंधा धृतराष्ट्र / आदमियत के खिलाफ खड़े हत्यारों की एक पूरी जमात।"[12]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'कृष्णाधर्मा मैं' यह एक लंबी कविता है। इस कविता में कवयित्री ने मनुष्य को कर्तव्य पथ-पर चलने का, संघर्ष स्थिति में अदम्य साहस के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया है। इस काव्य-संग्रह में पौराणिक मिथक को समसामयिक स्थितियों से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। आम आदमी के युगों से चली आ रही समाज व्यवस्था की परंपरा के अनुसार उन्हें मिली हुई वेदना, त्रासदी, व्यथा गरीबी और बेकारी की दशा का अंकन किया हैं।

संदर्भ:-

1. कृष्णधर्मा मैं-प्रभा खेतान, पृ.4
2. वही, पृ.3
3. वही, पृ.5
4. वही, पृ.14
5. वही, पृ.15-16
6. वही, पृ.16
7. वही, पृ.17
8. वही, पृ.21
9. वही, पृ.28
10. वही, पृ.47
11. वही, पृ.48
12. वही, पृ.19